मा मर गई. और मैं ने इसे बकरी का दूध पिला पिला कर पाला है. यह सुन, राजा ने कहा सच तू नारीचतुर है.

फिर सेजचतुर को, अच्छे अच्छे बिछोने करवा, पलंग पर सुलवाया. प्रभात हुए. राजा ने उसे बुलाकर पूछा तू रात भर सुख से सोया? उस ने कहा महाराज! रात भर नींद न आई. राजा ने कहा किस कारन. उस ने कहा महाराज! इस सेज की सातवीं तह में एक बाल है. वह मेरी पिठ में चुभता था. इसे नींद न आइ. यह सुन राजा ने उस बिछोने की सातवीं तह में देखा तो एक बाल निकला. तब उस से कहा कि तू सच सेजचतुर है.

इतनी बात कह, बैताल ने पूछा उन तीनों में कौन अति चतुर है? राजा बीर बिक्रमाजीत ने कहा, जो सेजचतुर है. यह सुन, बैताल फिर उसी दरख़त पर जा लटका. राजा भी वोंहीं जा, उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

चौबीसवीं कहानी.

बैताल ने कहा ऐ राजा! कलिंग देस में एक यज्ञ-शर्मा नाम ब्राह्मण. तिस की स्त्री का नाम सोमदत्ता अति रूपवती थी. वह ब्राह्मण यज्ञ करने लगा. इस में उस स्त्री के एक सुंदर लड़का ऊआ. जब वह पांच बरस का ऊआ, तब बाप उस का शास्त्र पढ़ाने लगा. बारह

बरस की उमर में वह सब शास्त्र पढ़के बड़ा पंडित ऊआ; और सदा अपने बाप की सेवा में रहने लगा.

कितने एक दिन बीते, वह लड़का मर गया. उस के सोग से, माता पिता चिल्ला चिल्ला रोने लगे. यह ख़बर पा, सारे कुनबे के लोग धाये; और उस लड़के को अरथी में बांधकर श्मशान में ले गये; और वहां जा, उसे देख देख, आपस में कहने लगे, देखो मुए पर भी सुंदर लगता है. इसी तरह से बातें करते थे, और चिता चुनते थे, कि वहां एक योगी भी बैठा तपस्या कर रहा था. यह बात सुन, वह अपने जी में बिचारने लगा कि मेरा शरीर अति दृढ़ ऊआ. जो इस लड़के के शरीर में पैठूं, तो सुख से योग करूं.

यह सोचकर, उस लड़के के शरीर में पैठ, करवट ले, रामकृष्ण कह ऐसा उठ बैठा, जैसे कोई सोते से उठ बैठे. यह देख, तमाम लोग अचंभे में हो अपने अपने घर आये. और उस के बाप को, यह अचरज देख, बैराग ऊआ; पहले हंसा, पीछे रोया.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! कह वह क्यों हंसा, और क्यों रोया. तब राजा ने कहा योगी को इस के शरीर में जाते देख और यह बिद्या सीखकर हंसा; और अपने शरीर के छोड़ने के मोह से रोया, कि एक दिन, इसी तरह, मुझे भी अपना शरीर छोड़ना पड़ेगा. यह सुन बैताल फिर उसी दरख़त पर जा लटका. और राजा भी, पीछे जा उसे बांध कांधे पर रख, ले चला.

पच्चीसवीं कहानी.

तब बैताल बोला ऐ राजा! दक्षन दिसा में धर्मपुर नगर है. वहां के राजा का नाम महाबल. एक समैं, उसी देस का एक और राजा फ़ौज ले चढ़ आया, और उस का नगर आन घेरा. कितने एक दिनों लड़ता रहा. जब सैना इस की मिल गई और कुछ कट गई, तब लाचार हो, रात के वक्त, रानी को बेटी समेत साथ ले, जंगल में निकल गया. जब कई एक कोस बन में पहुंचा तो प्रभात ऊआ. और एक गांव नज़र आया. तब रानी और राजकन्या को एक पेड़ तले बिठला, आप गांव की तरफ़ खाने का कुछ सामान लेने चला था, कि इस में भीलों ने आन घेरा, और कहा हथयार डाल दे.

यह सुनके राजा ने तीर मारना शुरूअ किया; और उधर से उन्हों ने. इस तरह एक पहर लड़ाई रही. और कितने एक लोग भीलों के मारे गए. इतने में, एक तीर राजा के कपाल में ऐसा लगा कि वह भैरा कर गिर पड़ा. और एक ने आ राजा का सिर काट लिया. जब रानी और राजकन्या ने राजा को मुआ देखा, तो रोती पीटती उलटी बन को चली. इसी तरह से कोस दो एक चल, मांदी होके बैठीं, और अनेक अनेक भांति की चिंता करने लगीं.

इस में चंद्रसेन(१) नाम राजा और उस का बेटा, दोनों शिकार खेलते ऊए उसी जंगल में आ निकले; और दोनों के पांव के चिन्ह देख राजा ने अपने पुत्र से कहा, कि इस महाबन में आदमी के पांव के निशान कहां से आये. राजपुत्र ने कहा महाराज! ये चरन चिन्ह स्त्री के हैं; पुरुष का पांव ऐसा छोटा नहीं होता. राजा ने कहा सच; ऐसा कोमल चरन पुरुष का नहीं होता. फिर राजपुत्र ने कहा इसी समैं गई हैं. राजा ने कहा कि चलो इस बन में ढूंढें जो मिलें तो जिस का यह बड़ा पांव है सो तुझे दूंगा; और दूसरी मैं लूंगा. इस तरह से आपस में बचन बंद हो, आगे जा देखें तो दोनों बैठी ऊई हैं. उन्हें देख, खुश हो, मुवाफ़िक़ क़रार के अपने अपने घोड़े पर बैठा घर ले आये. रानी को राजकंवर ने रक्खा; और राजकन्या को राजा ने.

इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! उन दोनों के लड़कों का आपस में क्या नाता होगा? यह सुन राजा अज्ञान हो चुप रहा.

फिर बैताल खुश हो बोला कि ऐ राजा! मैं तेरा धीरज और साहस देख अति प्रसन्न ऊआ. पर एक बात मैं तुझ से कहता हूं, सो तू सुन; कि जिस के शरीर के रोम समान कांटों के, और देह काठ सी, और नाम शांतशील, सो तेरे नगर में आया है. और तुझे उन ने मेरे लाने को भेजा है; आप बैठा मरघट में मंच जगा

(१) चन्द्रसेन.